मध्य प्रदेश में प्रागैतहिासकि कलाकृतियाँ मलिीं

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **मध्य प्रदेश स्थति** घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान में एक खोज की गई, जहाँ **बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रज़िर्व** में अनुसंधान कर रहे **सोनीपत स्थति अशोका वशि्ववदि्यालय के पुरातत्त्ववदिों** के एक दल को जीवाश्म काष्ठ से बनी प्रागैतहिासकि कलाकृतियाँ मलिीं।

मुख्य बदिु:

- यह खोज दर्शाती है कि प्रागैतहिासकि चलवासी लोग **पेड़ के लट्ठों** को अपने औजारों और वस्तुओं को बनाने के लयि संसाधन के रूप में उपयोग करते थे।
- **जीवाश्म लकड़ी/काष्ठ से बने औजार भारत में** आम नहीं हैं तथा ये काफी **दुर्लभ** हैं, केवल **तमलिनाडु, राजस्थान और त्रपुिरा** में ही इनके कुछ उदाहरण पाए जाते हैं।
  - हालाँकि घुघवा में खोजी गई कलाकृतियों की आयु अनशि्चति बनी हुई है, लेकनि शोधकर्त्ताओं का अनुमान है कि वे कम-से-कम 10,000 वर्ष पुरानी हैं।
  - इन कलाकृतियों में मध्यम आकार के टुकड़े शामलि थे जनिकी लंबाई लगभग पाँच सेमी. थी।
  - इसके अतरिक्ति, आस-पास के क्षेत्र में लगभग दो सेमी. लंबे कुछ माइक्रोलथि भी पाए गए।
- मध्य प्रदेश में कई प्राचीन स्थल हैं जैसे भीमबेटका, जो संयुक्त राष्ट्र शैक्षकि, वैज्ञानकि और सांस्कृतकि संगठन (यूनेस्को) का वशि्व धरोहर स्थल है, हथनोरा (जहाँ नर्मदा बेसनि से जीवाश्म हड्डियों के रूप में एक महलिा की खोपड़ी का टुकड़ा पाया गया था) इसके अलावा **नीमटोन, पलिकिर** और **महादेव पपिरयिा** जैसे स्थल भी हैं।
  - इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से **क्वार्टज़ाइट**, **चर्ट और बलुआ पत्थर** जैसी सामग्रयिों से बने उपकरण पाए गए हैं।
- हालाँकि, जीवाश्म उद्यान में हाल ही में हुई खोज से पता चलता है कि **हमारे पूर्वज भी जीवाश्म लकड़ी का उपयोग करते थे,** जो यह दर्शाता है कि वे **केवल पत्थर के संसाधनों पर नरि्भर नहीं** थे।

घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म

- यह **डिडोरी** से 70 कलिोमीटर दूर **घुगवा गाँव में स्थति** है।
- यह 75 एकड़ भूमि के क्षेत्र में बसा हुआ है, जहाँ पत्तियों और पेड़ों के रोचक एवं दुर्लभ जीवाश्म की खोज जारी है।
- स राष्ट्रीय उद्यान में **पादप जीवाश्म रूप में** हैं जो भारत में **लगभग 40 मलियिन से 150 मलियिन वर्ष पूर्व** मौजूद थे।

बांधवगढ़ टाइगर रज़िर्व

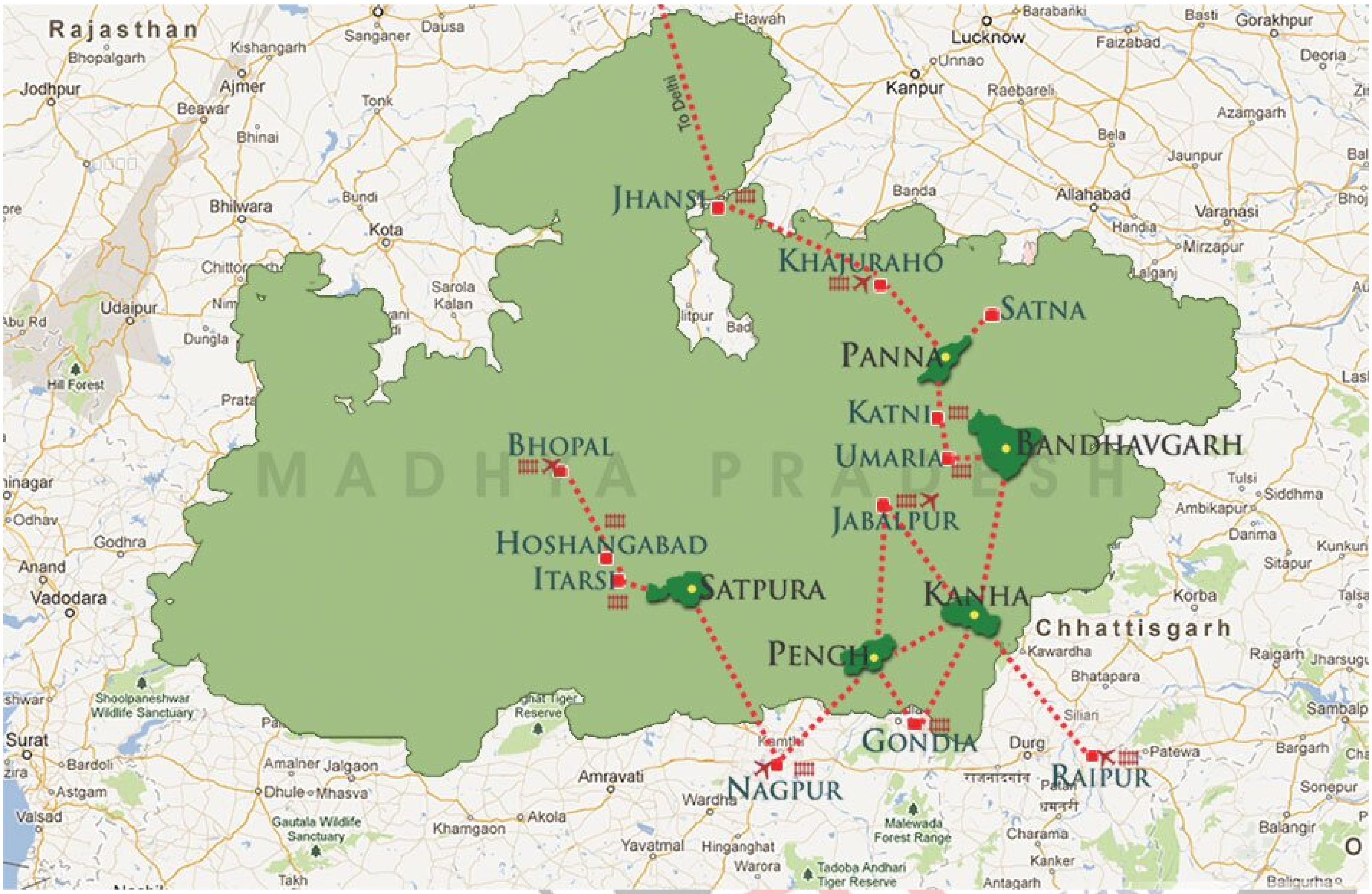

[//](#)

- **परिचय:** वर्ष 1968 में इसे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया तथा **वर्ष 1993 में** पड़ोसी पनपथा अभयारण्य में [**प्रोजेक्ट टाइगर**](#) नेटवर्क के तहत इसे **बाघ अभयारण्य घोषित** किया गया।
- **भौगोलिक पहलू:** यह **मध्य प्रदेश की सुदूर उत्तर-पूर्वी सीमा** और **सतपुड़ा पर्वत शृंखला के उत्तरी किनारे पर** स्थित है।
- **जलवायु:** उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु क्षेत्र।
- **जैवविविधता:** मुख्य भूमि में बाघों की संख्या बहुत अधिक है। यहाँ स्तनधारियों की 22 से अधिक प्रजातियाँ और पक्षियों की 250 से अधिक प्रजातियाँ हैं।
    - **उपस्थित प्रजातियाँ:** एशियाई सियार, बंगाल फॉक्स, स्लॉथ बियर, स्ट्राइप्ड हायना, तेंदुआ और बाघ, जंगली सूअर, नीलगाय, चिंकारा तथा गौर (एकमात्र शाकाहारी)।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prehistoric-artifacts-found-in-madhya-pradesh